REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

देश विभाजन और नारी की त्रासदी
(देश विभाजन पर आधारित कुछ विशेष उपन्यासों के संदर्भ में)

प्रा.डॉ. युवराज इंद्रजित जाधव
आदर्श कॉलेज, उमरगा , ता. उमरगा जि. उस्मानाबाद .

हमारे देश में हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष बहुत पूराने काल से चला आ रहा है। हिन्दू स्वयं को यहाँ के मूल निवासी मानते है। मुस्लिम तो विदेशी है। यहाँ रहना है तो हिन्दू संस्कृति को अपनाकर रहना पडेगा। मुस्लिम मानते है हमारा जन्म ही हुकूमत करने के लिए ही हुआ है। ऐसे अलग-अलग विचारधारा के कारण हमेशा हिन्दू-मुस्लिम में संघर्ष हुए है। मुगल शासक, मुस्लिम शासक और अंग्रेज शासक के काल में उसने और उग्र रुप धारण किया। गोरक्षा आंदोलन, शुद्धि आंदोलन, मुस्लिम लीग, अकाली दल, बजरंग दल, आर.एस.एस. जैसे संगठन के कारण हिन्दू-मुस्लिम में खाई और अधिक बढ़ती गयी। अंग्रेज सरकार हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष को खत्म करने के बजाए अपनी सत्ता बनाये रखने के लिए 'तोड़ो और फोडो' नीति को अपनाती है इसके कारण हिन्दू-मुस्लिम संप्रदाय में संघर्ष बढ़ता रहता है। संयुक्त चुनाव के समय लीग के साथ काँगेस का वादा न निभाना भी देश विभाजन के लिए जिम्मेदार माना जा सकता है। अंत में देश विभाजन के पूर्व और देश विभाजन के समय जो वारदातें आरंभ हुई उससे देश के धरती का बँटवारा ही नही हुआ अत: मनुष्यता का बँटवारा हो गया। दोनों समुदायों के मन में जो नफरत की आग सुलग रही थी उससे सब कुछ नष्ट हुआ! देश विभाजन के समय दोनों सप्रदायों ने एक-दूसरों के स्त्रियों पर अत्याचार कर उसके नंगे परेड लेकर उनके वर्जित अगों पर कुछ भी लिखकर उसे भोगा या काटकर फेंक दिया या सौदागरों को अपऱ्हत स्त्रियों को बेचने जैसा वर्बरता पूर्ण कार्य किया वह मानव जाति के इतिहास में कलंक माना जाता है। उस समय की स्त्रियाँ बिलकूल निर्दोष होकर भी दोनों समुदायों ने एक-दूसरे के स्त्रियों पर अत्याचार किया है।

हिन्दू स्त्रियों को अपऱ्हण करने के बाद यह मालूम था कि घरवाले उनको अपनायेगें नही इसके कारण वह मजबूरन मुस्लिमों के घर रहने लगी थी।

हिन्दू इतने कर्मठ थे कि घर से अपऱ्हत स्त्री को फिर घर में रखने के लिए तैयार नही थे जैसे तमस उपन्यास में चित्रित प्रकाशों नामक लड़की को अल्लाहरखाँह उठाकर ले जाता है। उसके घरवाले प्रकाशों को मिलने के लिए तक नही जाते। अंत में प्रकाशों धीरे-धीरे क्यों न हो अल्लाहरखाहँ को साथ समझौता कर लेती है। वह अल्लाहरखाँ को कहती है "मै पानी ले ने जाती थी तो मुझे कंकड क्यों मारता था?" १) दोनों सप्रदायों के लोगों ने स्त्रियों को उपभोग की ही वस्तू मान रखा था। 'तट के बंधन' उपन्यास में चित्रित जूलैखाँ को एक हिन्दू उठाकर ले जाता है और रखैल बना देता है। उसका धर्म-परिवर्तन करा देता है। वह असुरक्षापूर्ण भयावह मानसिकता को झेलकर चुपचाप अत्याचार सहन कर लेती है।

'वह नीड़' उषादेवी मित्रा के उपन्यास में चित्रित सुनंदा अपने पति के साथ रहती थी लेकिन उसका पति रविंद्र अपनी संपत्ति बचाने के लिए अकेली पत्नी को छोडकर भाग जाता है। ऐसी भी स्थितियों से कई स्त्रियों को गुजरना पड़ा है।

अनिता गोपाल नामक लड़के से प्यार करती थी लेकिन अनिता को एक दिन एक मुस्लिम युवक उठाकर ले जाता है उसके साथ वह रहती है। एक दिन अकस्मात रविंद्र ने देखा अनिता पाकिस्तान में किसी मुस्लिम के घर बसी है तो रविंद्र फिर से अनिता को अपनाने के लिए तैयार नही होता। ऐसी हजारो अनिता जैसी बुलबुले आजादी के नीवं मे दफनाई गई थी। हिन्दु इतके कर्मठ थे कि फिर से उन्होने अपने परिवार या प्रेमी को अपऱ्हण होने के बाद अपनाया नही।

"तट के बंधन" उपन्यास में चित्रित अनिता पर मुस्लिम युवक द्वारा अत्याचार ही नही होता बल्कि पाकिस्तान में मुस्लिम के साथ जबरन रहना पड़ता है।

'झुठा सच' उपन्यास का गफूरा नामक मुस्लिम व्यक्ति हिन्दुओं की ढेर सारी औरतों का अपऱ्हण करके एक कमरे में बंद कर देता है। बंती, संतवत बिशनो जैसी अनेक स्त्रियाँ अपनी-अपनी बीती एक-दूसरों को बताने लगती है किसी तरह बंती मुस्लिम के चंगूल से छुटकारा पाकर बड़ी परिश्रम के बाद घरवालो को ढूँढकर निकालती है तब घरवाले उसे स्वीकार नही करते कहते है जब मुसलमानों ने घरों मे घुसकर हिन्दु स्त्रियों को भोगा है तुम्हे छोड़ा होगा? सौ-सौ मुसलमान बापरे! तुझे ऐसे ही छोड़े होंगे। पडोसन भी ऐसा ही कहने लगती है तब बंती वही देहलीज पर माथा पटक-पटकर जान देती है।

'झूठा सच' यशपाल के उपन्यास में चित्रित तारा का विवाह सोमराज के साथ हुआ था। सुहागरात के समय पति के पिटाई से तंग आकर वह भागते समय मुस्लिम गुण्ड नब्बू के हाथों लग जाती है। नब्बू शादी-शुदा होकर भी तारा पर अत्याचार करता है वह बार-बार गिडगिडाते हुए कहती है "बेशक तु मुझे मार डाल, मेरा गला काट दे।"[२]

वह मरने के लिए तैयार थी लेकिन इज्जत बचाना चाहती थी लेकिन नब्बू हिन्दुओं के प्रति जो नफरत थी तारा पर अत्याचार करके उसका बदला लेता है। वहाँ से तारा को हाफिज फुसलाकर ले जाता है चल बेटी चोट पर दवाईयाँ लगायेंगे। वहा ले जा कर तारा का धर्म-परिवर्तन करने की कोशिश करता है। वह तैयार नही होती। तो उसे घर से निकाल देते है हिन्दु कॅम्प में पहुँचाते समय मुस्लिम ड्रायव्हर तारा पर बलात्कार करता है। बरसों से मुस्लिमों के मन में हिन्दु स्त्रियों के बांरे मे जो आकर्षण था उसकी चाह इस प्रकार देश विभाजन के समय पूरी कर रहे थे। कुरुप स्त्रियों को काटकर फेंक रहे थे।

तमस उपन्यास में चित्रित एक हिन्दु लडकी छतपर टहल रही थी तब मुस्लिम युवक उसका पीछा कर उसे पकड लेते हैं नबी, लालू, मुर्तजा, मीरा अपने-अपने अनुभव बताने लगते है "कसम अल्लाह पाक की! जब मेरी बारी आयी तो नीचे से ना हूँ न हाँ, वह हिले ही नही, मैने देखा तो लडकी मरी हुयी। मै लाश से ही जना किये जा रहा था"[३] एक हिन्दु लडकी को चौदह-चौदह मुस्लिम लड़को ने एक के बाद एक ऐसे बलात्कार किया जिसके कारण वह मर गयी। मनुष्य इतने पाशविक बन गये थे। अन्य एक मुजाहिद अनुभव बताता है हम कराडों के घर जा रहे थे बिलकुल सामने एक स्त्री खडी थी 'साली हरामजादी कह रह थी चाहे तो एक-एक करके मुझे अपने पास रख लो लेकिन मुझे जिंदा छोड़ दो।'[३] अजीज ने खंजर सीधे उसके छाती में मारा वह लुढ़क गयी। इस प्रकार मुस्लिम लीगी हिन्दू स्त्रियों पर अत्याचार कर रहे थे। कुछ हिन्दु स्त्रियाँ मरने के लिए तैयार थी लेकिन इज्जत बचाना चाहती थी तो कुछ ऐसी भी बागडी स्त्रियों थी जो जिंदा रहने की लालसा ले कर जी रही थी।

कुछ हिन्दु-सिख स्त्रियाँ इज्जत बचाने के लिए काफिरों से बचने के लिए कुएँ में छलाँग लगाकर खुदकुशी कर लेती है 'वाह ! गुरु कहकर सबसे पहले जसबीर कौर ने कुएँ में छलाँग लगायी'[४] उसके बाद दसियों सिख स्त्रियाँ ने वही किया। वह किसी भी हालत में इज्जत बचाना चाहती थी।

'समझौता एक्सप्रेस' उपन्यास में जो बीबी मुहमद नामक स्त्री है उसका शोषण हिन्दुओं द्वारा किया जाता है। उसको मुस्लिम से हिन्दु धर्म में परिवर्तन किया जाता है। इस प्रकार दोनो संप्रदाय के लोग एक-दुसरे लोगों का जबरन धर्म-परिवर्तन कर रहे थे।

'और इन्सान मर गया' रामानंद सागर के उपन्यास में किशोरील नाम हिन्दु व्यक्ति घर में पत्नी और बेटी को छोड़कर नोटों की गड्डी लेकर भाग जाता है। गली के कुछ मुसलमानों को खिला-पिलाकर खूश रखने की कोशिश करता है। उषा को मुस्लिम गुण्ड भगाकर ले जाता है तब उषा जहर खाकर मर जाती है।

देश विभाजन के समय दोनों संप्रदायों के लोगों ने एक-दूसरे की स्त्रियों का अपऱ्हण करके उसको भोगा, उसके पातिव्रत्य के साथ खिलवाड़ करते रहे। कुछ हिन्दु युवकों ने मुस्लिम लड़कियों को बचाया उसके साथ विवाह भी किया था। जैसे 'कितने पाकिस्तान' का बुटासिंह नामक व्यक्ति जेनीब को बचाकर घर ले जाता है उससे विवाह करता है। मुस्लिमों को पता लगने पर वह जेनीब को पाकिस्तान ले जाते है। बुटासिंह अपना धर्म-परिवर्तन कर पाकिस्तान चला जाता है लेकिन वे जेनीब को मिलने नही देते तब बुटासिंह और उनकी लडकी सुलताना पटरी पर सोकर खुदकुशी कर लेते हैं।

विद्या नायम हिन्दु लड़की अदीब से प्रेम करती है लेकिन विभाजन के समय विद्या का मुस्लिम अपऱ्हण करके पाकिस्तान ले जाते है। वह पाकिस्तान कैसी पहूँची? उसका धर्मांतरण कैसे हुआ? कहा नही जा सकता लेकिन अब वह पाकिस्तान के एक IAS अधिकारी की माँ है।

कुछ उपन्यासों में ऐसे चित्रण आये है कि उनके ही समुदाय के लोग स्त्रियों पर अत्याचार कर के उसका दोषारोपण दूसरे समुदाय पर थोंप रहे थे।

हिन्दु भी मुस्लिम स्त्रियों का नंगा परेड लेकर उनका नीलाम कर रहे थे 'भीड़ के बीचों-बीच एक आदमी चोटी से पकड-पकड कर निर्वस्त्र स्त्रियों का नीलाम कर रहे थे सब मुसलमान की थी।'[५]

इस प्रकार देश विभाजन के समय और पूर्व दोनों संप्रदायों की स्त्रियाँ नरकमय यातनाएँ भूगत रही थी इनके विविध पहलुओं को उजागर किया है।

संदर्भ ग्रंथ :-

१) तमस पृ. २१७
२) झूठा सच पृ. १७२

३) तमस पृ. २१५, २७५
४) तमस पृ. २१९
५) झूठा सच पृ. १९७